International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-08-2021, Accepted: 15-09-2021, Published: 30-09-2021
Volume 3, Issue 3, 2021, Page No. 47-48

सूफी कवियों का काव्यादर्श

ज्योत्स्ना आनंद
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय सूफी काव्य परंपरा का बहुआयामी निदर्शन प्रदान करना है । सूफी कवियों के काव्यादर्श एवं उनके जीवन मूल्यों का समग्र विवेचन सोदाहरण प्रस्तुत करना ही शोध–आलेख का प्रमुख ध्येय रहा है । शोध–आलेख के माध्यम से समग्र सूफी काव्य परंपरा पर दृष्टिपात किया गया है तथा सूफी कवियों के काव्यादर्श को व्याख्यायित किया गया है ।

मूल शब्दः सूफी, काव्यादर्श, प्रेमाख्यानक, संप्रदाय, साहित्याचार्यों, प्रेमगाथा परंपरा

प्रस्तावना

हिंदी जगत् में अनेक विद्वानों ने सूफी कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्यों के निर्माण का उद्देश्य धर्म प्रचार करना माना है। इस संदर्भ में डॉ० रामकुमार वर्मा का कथन है – "पद्मावत की सारी कथा के पीछे सूफी सिद्धांतों की रूपरेखा है किंतु वे इसे निभा नहीं सके।" अयोध्यासिंह उपाध्याय का भी ऐसा ही मानना है। सूफी संप्रदाय के भावों को उत्तमता के साथ जनता के समक्ष लाने के लिए अपने प्रसिद्ध ग्रंथ पद्मावत की रचना की। इसी प्रकार आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी व आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी सूफी काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि जायसी कृत पद्मावत के निर्माण का उद्देश्य सूफी सिद्धांतों का प्रचार माना है। शुक्ल जी के बाद प्रायः उन्हीं का अनुसरण करते हुए विद्वानों ने यह धारणा बना ली कि इन सूफी काव्यों के निर्माण का उद्देश्य लौकिक प्रेम–कहानियों के माध्यम से परोक्ष रूप से सूफी धर्म अथवा मुसलमान धर्म का प्रचार करना है, परंतु यह सत्य नहीं है। वस्तुस्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार – "प्रेमगाथा की परंपरा में पद्मावत सबसे प्रौढ़ और सरस है। प्रेममार्गी सूफी कवियों की और कथाओं से इस कथा में यह विशेषता है कि इसके ब्यौरों से भी साधना के मार्ग, उसकी कठिनाइयों और सिद्धि के स्वरूप आदि की जगह–जगह व्यंजना होती है।"

भारतीय साहित्याचार्यों के अनुसार काव्य निर्माण करने का उद्देश्य यश प्राप्ति, धन प्राप्ति व्यवहार ज्ञान, पाप का नाश, मोक्ष प्राप्ति अथवा मधुर उपदेश देना होता है। अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष – इन चार पुरुषार्थों में से किसी एक की उपलब्धि काव्य के निर्माण का उद्देश्य स्वीकार किया गया है। जायसी आदि सूफी कवियों का उद्देश्य काव्य रचना द्वारा पैसा कमाना नहीं था। साथ ही ये सूफी प्रेमाख्यानक काव्य मात्र धर्म के प्रचार के लिए भी संभवतः नहीं लिखे गए क्योंकि इनके पाठक इन्हें धार्मिक रचना मानकर नहीं पढ़ते। यह अलग बात है कि ये सूफी कवि प्रच्छन्न रूप से ऐसा चाहते हों। किसी भी कृति के निर्माण के मूल में अन्य उद्देश्यों को छोड़कर यशोलिप्सा की बलवती आकांक्षा सदैव सन्निहित रहती है। इस उद्देश्य की अभिव्यक्ति सूफी कवि जायसी ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में की है –

ओ यह जानि कवित्त अस कीन्हा, मकु यह रहे जगत में चीन्हा।
केइ न जनत जस बेंचा, केइ न लीह जस मोल।
जो यह सुनै कहानी हमैं, संवेरे दुइ बोल।।

जायसी ने आनंद व परमार्थ सिद्धि रूपी आंतरिक प्रयोजनों के अतिरिक्त कवि को प्राप्त होने वाले फलों–यशोलाभ एवं अर्थ प्राप्ति की भी चर्चा की है। जायसी ने अनुभूतिमयी कविता की मार्मिकता का अन्यत्र भी उल्लेख किया है – "कवि कै जीभ खरग हिरवानी, एक दिसि आग दोसर दिसि पानी।' काव्य रचना के अन्य प्रयोजनों में जायसी ने 'कहरनामा' की निम्न उिकत में सहृदय को प्राप्य परमार्थ फल अर्थात् मोक्ष की भी चर्चा की है – "पढ़े–सुनै, समुझै, समुझावै, होइ सुफल परमारथ रे।" आंतरिक प्रयोजनों की अपेक्षा जायसी ने काव्य रचना के बाह्य फलों का अधिक उल्लेख किया है, किंतु इस संदर्भ में उनकी उक्तियाँ अविरल है। इस संदर्भ में मुग्ध हो विजयदेवनारायण साही 'जायसी' नामक कृति में लिखते हैं – "एक अर्थ में जायसी हिंदी के पहले विधिवत् कवि हैं। कबीर में प्रयास के चिह्न हैं, जायसी में प्रयास कहीं दिखलायी नहीं देता।"

मंझन ने भी कवि को प्राप्त होने वाले यश का ही उल्लेख किया है। वे यश को उत्तम काव्य कृति का सहज फल मानते हैं। उनका मानना है कि जब तक कृति नष्ट नहीं होती तब तक कवि का नाम भी अमर रहता है। सत्काव्य से कवि को यश प्राप्ति स्वाभाविक उपलब्धि है, जिसका काव्यशास्त्र में प्रचुर प्रतिपादन हुआ है।

प्रायः सभी सूफी कवियों ने सामान्य परंपरा के अनुरूप आनंद की उपलब्धि, पाप का नाश, यशोलाभ और धनार्जन को काव्यादर्श माना है। इनमें से आनंद प्राप्ति पर उनका विशेष बल रहा है। काव्यानन्द उभयवर्ती होता है। उसे मात्र कवि या सहृदय के लिए मानना उचित न होगा। संभवतः इसीलिए उसमान ने कहा है कि अंतःप्रेरणा से लिखित काव्य में जिस मधुर भाव–विन्यास के लिए अवकाश रहता है उसके फलस्वरूप सहृदय को आनंद प्राप्ति अवश्य होती है।

"कथा एक मैं हिएँ उपाई, कहत मीठ औ सुनत सौहाई।"

आलम ने आनंद को सरसता से उद्भुत फल विशेष माना है और अपने मंतव्य को संगीत कला के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त किया है। उन्होंने पुष्पावती के नागरिकों पर काव्य नायक माधव की संगीत माधुरी के प्रभावोल्लेख द्वारा अप्रत्यक्षतः यह मंतव्य प्रकट किया है कि जिस प्रकार की राग की सरसता श्रोता को मंत्रमुग्ध कर लेती है उसी प्रकार लयात्मक कविता भी सहृदयों को प्रभावित करती है

कौ राग माधौनल रागी, ज्यै तन मांहि ठगोरी लागी।
अधिक मधुर धुनि बीनु बजावै, सरस राग रागिनि उपजावै।।

कामावती नरेश की सभा में गाए जाने वाले रागों के प्रसंग में भी आलम ने यह संकेत किया है कि राग विशेष के श्रवण से श्रोता रस–माधुरी में मग्न हो जाता है – "सरसावन औ आहि विनोदा, गावैं सरस बसंतक मोदा।" संगीत कला के संदर्भ में कही गई यह उक्ति काव्य–कला के लिए समान रूप से सार्थक है। अन्यत्र आलम ने कथाकाव्य के संदर्भ में भी प्रत्यक्षतः यह मत व्यक्त किया है कि कृति विशेष के तन्मयतापूर्वक अनुशीलन से रस–मर्मज्ञ सहृदयों को आनंद की अनुभूति अवश्य होती है।

सुनत स्रवन यह कथा सुहाई, अति रसाल पंडित मनभाई।
प्रीतिवत है सुनै सो कोई, बाढै प्रीति हिएँ सुख होई।।

उसमान ने पाप–ताप–ताप–निवारण को भी काव्य का आदर्श या सहज फल माना है। यथा – 'कहौं कहानी प्रेम की, जेहि निसि जाय विहाय।" यहाँ 'प्रेम–कहानी' का अर्थ आध्यात्मिक रूपक कथा है जिसके अनुशीलन से सहृदय को ऐसी अंतःप्रेरणा की प्राप्ति संभव है जिससे वह पाप रूपी रात्रि के प्रभाव से मुक्त हो सकता है। इसी प्रकार यहाँ 'निसि' का प्रयोग प्रतीक रूप में हुआ है जिसमें अज्ञान, भौतिक, ताप, पाप, मानसिक ग्लानि आदि का समाहार है। काव्य से निश्चय ही इनका परिहार संभव है।
सूफी कवियों ने काव्य के गौण फलों की भी चर्चा की है। उसमान ने कवि की अमृत वाणी को यशदायिनी माना है – "बचन समान सुधा जग नाहीं। जेहि पाए कवि अमर रहाहीं।" इसी प्रकार माधव कौर कामकंदला की प्रेमकथा के संदर्भ में राजा विक्रम की निम्नलिखित उक्ति से यह संकेत मिलता है कि यश का विशिष्ट काव्य–प्रयोजनत्व आलम को भी मान्य था – "इहि की प्रीति रही जन जानी, जग मैं जुग जुग चलै कहानी।" यश प्राप्ति के लिए काव्य का अवलंबन कवियों की स्वाभावित प्रवृत्ति थी।
उसमान ने 'चित्रावली' में काव्य का उद्देश्य प्रकट करते हुए गर्वोक्ति के साथ कहा है –

"जाकी बुद्धि होइ अधिकाइ, आम कथा एक कहै बनाई।
बालक सुनत कामरस लावा, तरुनन्ह के संग काम बढ़ावा।
भोगी कहं सुख भोग बढ़ावा।"

नूर मुहम्मद ने अपनी रचना का उद्देश्य प्रेमरस का प्रचार करना बताया है –

"नूर मुहम्मद यह कथा अहै प्रेम की बात।
जाहि मन होई प्रेम रस, पढ़ै सोई दिन रात।।

कहा जा सकता है कि सूफी कवियों ने अपने काव्यादर्श को अधिक स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है। यद्यपि यह मान्यता है कि सूफियों का मुख्य काव्यादर्श अपने धर्म के सिद्धांतों का प्रचार था तथापि इसका उन्होंने कहीं कोई संकेत नहीं दिया है। उनके संकेतानुसार तो उनकी कृतियों का उद्देश्य यश प्राप्ति और मनोरंजन करना है। वस्तुतः ऊपरी तौर से देखने पर तो यही लगता है कि ये साधारण प्रेमकथाएँ आध्यात्मिक व्यंजना करने में भी समर्थ हैं परंतु प्रतीकार्थ रूप में ये प्रेमकथाएँ आध्यात्मिक व्यंजना करने में भी समर्थ हैं। अतः इस दृष्टि से सूफी कवियों की प्रेमकथाओं की रचना का आदर्श या प्रयोजन धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार भी माना जा सकता है। इन सूफी कवियों का एक अन्य काव्यादर्श हिंदू–मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय कर उनमें एकता स्थापित करने का प्रयास भी है। दर्शनवेत्ता डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने सूफी कवि जायसी के संदर्भ में लिखा था – "पद्मावत काव्य का अनुशीलन करते हुए जिस बात की गहरी छाप मन पर पड़ती है, वह यह कि इससे कवि ने भारत–भूमि की मिट्टी के साथ अपने को कितना मिला दिया था! जायसी सच्चे पृथ्वी–पुत्र थे।"

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि सूफी कवियों ने अपनी रचनाओं में स्पष्टतः अपने काव्यादर्श को व्यक्त किया है। प्रधानतः उनका काव्यादर्श यशप्राप्ति और धार्मिक प्रचार माना जा सकता है और गौणतः हिंदू–मुस्लिम एकता के सार्थक प्रयास ।

संदर्भ

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, प्रथम संस्करण 2002 लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ–69
2. जायसी, विजयदेवनारायण साही, प्रथम संस्करण 1993, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, भूमिका–भाग
3. चित्रावली, उसमान, संपादक जगमोहन वर्मा, प्रथम संस्करण 1912, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
4. गगनांचल, मलिक मुहम्मद जायसी विशेषांक, संपादक अनवर स्लीम, अंक–1, जनवरी–फरवरी 2014, नई दिल्ली, पृष्ठ–5